प्रथम अध्याय

सूरदास व्यक्तित्व एवं कृतित्व

सूरदास व्यक्तित्व एवं कृतित्व --

किसी भी साहित्य या साहित्यकार का अध्ययन करने से पहले उस युग की परिस्थितियों को देखना यथोचित होगा । हिन्दी साहित्य के इतिहास में भक्तिकाल को महत्वपूर्ण माना गया है । भक्तिकाल में दो भक्ति - धारायें प्रवाहित हुईं । एक सगुण काव्य - धारा और दूसरी निर्गुण काव्य - धारा । सगुण काव्य - धारा में रामकाव्य और कृष्णकाव्य को महत्वपूर्ण माना गया है । रामकाव्य के प्रमुख कवि महात्मा तुलसीदास हैं और कृष्ण काव्य के प्रमुख कवि सूरदास । हिन्दी साहित्य में कृष्णभक्ति की अजस्त्र धारा को प्रवाहित करनेवाले भक्त कवियों में सूरदास का स्थान अग्रगण्य है । सूरदास के जीवन के बारेमें अभीतक सुनिश्चित जानकारी नहीं मिलती ।

सूरदास को हिन्दी साहित्य के अकाश का सूर्य माना जाता है । सूरदास ने जिस युग में अपना साहित्य रचा उस युग में भारत में परकीय आक्रमण होते थे । देश में अशांतता का वातावरण था । अधिकत्तर मुसलमान शासक हिन्दु जन-जातियोंपर अत्याचार करते थे । सामान्य जनता इन अत्याचारों से त्रस्त थी । इस युग में जाति-पाँति के बन्धन भी अधिक कठोर थी । लोगों के मन में विश्वास जगाने के लिए सूरदास ने कृष्ण - भक्ति की लहर दौडाकर शांति का वातावरण निर्माण किया । विपरित परिस्थिति में महान भक्ति - साहित्य की रचना करनेवाले इस महाकवि के जीवन और उसकी कृतियों के बारेमें जानना यथोचित होगा ।

जन्मस्थान --

महात्मा सूरदास का जन्म कब और कहाँ हुआ ? यह विवादग्रस्त है । सूरदास जी की जन्मभूमि के सम्बन्ध में चार स्थानों के नाम मिलते हैं । गोपाचल, मथुरा प्रांत में कोई ग्राम, रूनकता तथा सी ही । विद्वानों ने उपर्युक्त नामों का

उल्लेख करके अपने - अपने मत प्रतिष्ठित किये हैं । ` साहित्य - लहरी ` के वंश। परिचय वाले पद में सूर के पिता का निवास - स्थान गोपाचल माना गया है । स्व.डॉ.पीताम्बरनाथ बड़थ्वाल ने ग्वालियर का नाम ` गोपाचल ` सिद्ध किया है और इसे ही सूर की जन्म-भूमि माना है । कवि मियाँसिंह - कृत ` भक्त विनोद ` में सूर की जन्म-भूमि के विषय में लिखा है --

मथुरा प्रान्त विप्र कर गेहा ` भो उत्पन्न भक्त हरि जेहा ।

इसमें मथुरा प्रान्त के कोई ग्राम का उल्लेख होता है । पं.रामचन्द्र शुक्ल ने सूर की जन्म-भूमि ` रुनकता ` लिखी है । वार्ता-साहित्य के अनुसार सूर का जन्म - स्थान सीही है ।

सूर की जन्म-भूमि के बारेमें ` सूर निर्णय ` में इस संबंध में ये बातें लिखी गई हैं -- ` श्री हरिराय जी ने चौरासी वैष्णवन की वार्ता के भावप्रकाश में सूरदास का जन्म दिल्ली के निकट सीही नामक ग्राम को बताया है । बाबू राधाकृष्णदास ने सी ही को मथुरा प्रान्त के अन्दर लिखा था, किन्तु उनका यह कथन भ्रमात्मक है । हरिराय जी ने सीही की स्थिति बतलाते हुए कहा है --

` दिल्ली के पास चार कोस उरे में एक सीही ग्राम है, जहाँ परीक्षित के बेटा जन्मेजय ने सर्प-यज्ञ किया है । ` हरिराय जी के इस कथन की पुष्टि उनके पूर्वज गोसाईं विठ्ठलनाथ जी एवं गोकुलनाथ जी के समकालीन प्राणनाथ कवि के निम्नलिखित कथन से भी होती है --

श्री विल्लभ प्रभु लाडिले, सीही सर जलजात ।
सारसुती-दुज तरू सुफल, सूर भगत विख्यात ।।

उपर्युक्त कथन से स्पष्ट होता है, कि सूरदास का जन्म-स्थान सीही है । और हिन्दी के अनेक विद्वान सूरदास का जन्म स्थान सीही मानने के पक्ष में हैं, इतिहासकारों ने भी इसे स्वीकार किया है ।

जन्मतिथि --

सूरदास की जन्मतिथि के बारेमें विद्वानों में मतभेद है । विद्वानों का कहना है कि सूरदास का जन्म सं.१५४० और मृत्यु सं.१६२० में हुई । अन्य कुछ विद्वानों ने लिखा है, कि सूर का जन्म सं.१५३९ के लगभग हुआ और गोलोकवास सं.१६३८ के लगभग हुआ ।

' पुष्टि सम्प्रदाय की मान्यता के अनुकूल सूरदासजी श्री वल्लभाचार्य जी से आयु में १० दिन छोटे थे । आचार्य जी का जन्म सं.१५३५ को वैशाख कृष्णा १० उपरान्त ११ रविवार निश्चित है इसलिए सूरदास जी की जन्म-तिथि सं.१५३५ की सुदी ५ मंगलवार को हुई ।'[१] इस तिथि की अन्य लेखकों ने भी पुष्टि की है । श्री वल्लभाचार्यजी के वंशज श्री गोपिकालंकार भट्टजी ने सूर की जन्म-तिथि का एक पद में उल्लेख किया है --

प्रगटे भक्त-शिरोमणि राय ।
माधव शुक्ला पंचमि उपर छट्ट अधिक सुखदाय ।।

उपर्युक्त कथन की पुष्टि भट्टजी के पूर्ववर्ती श्री द्वारिकेशजी ने निम्न उद्धरण से इस प्रकार की है --

' सो सुरदास जी श्री आचार्य जी
महाप्रभुन तें दस दिन छोटे हते ।'

' निज वार्ता' में गोसाई श्री गोकुलनाथ जी ने सूरदास की जन्म तिथि के बारेमें इस प्रकार कथन किया है --

' सो सूरदास जी जब श्री आचार्य जी महाप्रभु को प्रागटय भयो है,तब इनको जन्म भयो है । सो श्री आचार्य जी सों ये दस दिन छोटे थे ।' डॉ.दीनदयाल गुप्त ने इस संबंध में खोज करते हुए अपना नाथद्वारे का अनुभव इस प्रकार लिखा है --
' श्री नाथद्वारे में सूरदास जी का जन्मोत्सव श्री वल्लभाचार्य जी के जन्म दिन बैसाख बदी' के बाद बैसाख सुदी ५ को मनाया जाता है । सूर के इस जन्म दिवस के मानने का उत्सव संप्रदाय में नया नहीं है, यह परंपरा बहुत प्राचीन है ।'[२]

उपर्युक्त सभी विद्वानों के विचार - विमर्श के बाद 'सूर-निर्णय' के लेखक द्वय ने सूर की जन्मतिथि इस प्रकार बतायी है --

'सूर की जन्म-तिथि सं.१५३५ वैशाख शुक्ल ५ मंगलवार को हुई है और जब तक सूर की जन्म-तिथि के बारेमें सर्वमान्य सबल प्रमाण न मिले तब तक सूर की जन्मतिथि दूसरी नहीं मानी जा सकती।'[3] इस प्रकार सूर की जन्म-तिथि सं.१५३५ की वैशाख सुदी ५ मंगलवार को सिध्द होती है।

सूर का अन्धत्व --

सूर के अन्धत्व के बारेमें काफी विवाद प्रचलित है। जैसे कि यह जन्मान्ध थे, या बाद में अन्धे हुए। उनके अन्धत्व के बारेमें अनेक दन्तकथाएँ प्रचलित हैं, जैसे -- ये एक रुपवति नारी पर आसक्त थे और उसी बात के प्रायचित स्वरूप उन्होंने अपनी आँखें फोड़ ली थीं। ये एक बार कुएँ में गिर पड़े थे। वहाँ से स्वयं भगवान कृष्ण ने उन्हें बाहर निकाला था। और भगवान के दर्शन कर लेने के बाद ये अन्य किसी को भी नहीं देखना चाहते थे, इसलिए उन्होंने या तो स्वयं अपनी आँखे फोड़ ली थी या भगवान से अन्धा होने का वरदान माँग लिया था इन जनश्रुतियों से यह स्पष्ट होता है कि सूरदास जन्मान्ध नहीं थे।

हिन्दी-साहित्य के कुछ विद्वान सूरदास के काव्य की पूर्णता से प्रभावित होकर उनकी जन्मान्धता पर विश्वास नहीं करते। सूरदास के काव्य में दृश्य जगत् के अत्यंत यथार्थ वर्णन हैं। उनके द्वारा प्रस्तुत रूपक, उपमाएँ एवं उत्प्रेक्षाएँ बहुत ही स्वाभाविक हैं। उनकी कविता में रंगों का ऐसा यथावत् कथन किया गया है, जो आँखों से देखे बिना केवल सुनी हुई बातों के आधार पर लिखना असंभव है। इसलिए वे उनको जन्मान्ध न मानकर बाद में नेत्र विहीन होने का अनुमान करते हैं।

राजनाथ शर्मा ने सूर के अन्धत्व के बारेमें लिखा है 'सूर-साहित्य में उपलब्ध प्रकृति-चित्रण, बाल-लीला, रूप-वर्णन आदि को देखकर इस बात पर विश्वास करना असम्भव है कि ये वर्णन एक जन्मान्ध व्यक्ति द्वारा किये गए हैं। इन वर्णनों

में इतनी भव्यता सूक्ष्म-निरीक्षण दृष्टि का ऐसा चमत्कार और यथार्थता है कि बिना आँखों से देखे ऐसे वर्णन करना सर्वथा असम्भव प्रतित होता है।'[४] तात्पर्य यह है कि सूरदास जन्मान्ध नहीं थे। डॉ.बृजेश्वर वर्मा ने भी सूर को जन्मान्ध नहीं माना वे सूर के अन्धत्व के बारेमें 'सूरदास' में लिखते हैं 'यदि सूरदास को जन्मान्ध माना जाए तो इस विचार और तर्क के युग में हमें चमत्कारों पर विश्वास करना पड़ेगा।'[५]

उपर्युक्त सभी विद्वानों का अनुमान है कि सूरदास जन्मांध नहीं थे, प्रत्युत अपनी वृध्दावस्था में नेत्र-विहीन हो गए थे। सूरदास जन्मान्ध थे ऐसा माननेवाले विद्वानों के कुछ मत निम्न प्रकार हैं --

नन्ददुलारे वाजपेयी नें 'महाकवि सूरदास' में सूरदास का जन्मान्ध होना स्वीकार किया है। नाभादास जी नें 'भक्तमाल' में सूरदास को जन्मान्ध माना है वे लिखते हैं --

'प्रतिबिम्बित दिवि दिष्टि हृदय हरी लीला भासी।
जनम करम गुन रूप सबै रसना परकासी।।

'भक्तविनोद' में मियाँसिहजी सूर को जन्मान्ध मानते हैं वे लिखते हैं ---

'जनम अंध दृग ज्योति विहीना।
जननि जनक कछु हरब न कीता।

'भाव-प्रकाश' कार हरिरायजी ने लिखा है --

'सो सूरदास जी के जन्मत ही नेत्र नहीं हैं।

'सूर निर्णय' के लेखक - द्वय ने अपने मत की पुष्टि में लिखा है 'सूर के महातप्रभु वल्लभाचार्य के द्वारा तत्व और दशाविधि लीला द्वारा ब्रह्मज्ञान प्राप्त करने के पूर्व उन्होंने जो काव्य-रचना की है, उनमें कहीं भी सृष्टि-सौन्दर्य की उपमा, उत्प्रेक्षा और रंगादि का वर्णन नहीं मिलता। हाँ पदों में सुने हुए पुराणादि के आधार पर ईश्वर के महात्म्य और जीव के अज्ञान आदि से सम्बन्धित विनय के भाव ही

व्यक्त किये हैं। उनके इस काव्य को लेखकर उनके जन्मान्ध न होने की बात कही जाती है।[6] इस प्रकार उपर्युक्त विद्वानों ने सूरदास को जन्मान्ध माना है। सूरदास के अन्धत्व के बारेमें अनेक पद मिलते हैं --

> 'चरण कमल बंदौ हरिराइ।
> जाकी कृपा पंगु गिरि लंघै अंधे को सब कुछ दरसाई।।
> बहिरौ सुनै,गूंग पुनि बोले,रंक चले सिर छात्र धराइ।
> 'सूरदास' स्वामी करूनामय बार-बार बंदौ तिहि पाइ।।

उपर्युक्त विचारों से सूरदास जन्मांध थे ऐसा लगता है। इस प्रकार कुछ विद्वानों ने सूरदास के जन्मांध होने के तो कुछ विद्वानों ने उनके जन्मांध न होने के तर्क प्रस्तुत किये हैं। जबतक नवीनतम प्रामाणिक तथ्य सामने नहीं आते, तब तक प्राप्त दोनों तत्वों को मानना पड़ता है।

माता-पिता कुटुम्ब तथा वंश परिचय --

सूरदास जी के माता-पिता के सम्बन्ध में सुनिश्चित जानकारी नहीं मिलती। उनके माता-पिता के बारेमें केवल इतना ही कहा जाता है कि वे निर्धन सारस्वत ब्राह्मण थे। सूर के तीन बड़े भाई थे। सूर अन्धे थे, इस कारण उनके माँ-बाप सूर की ओर से उदासीन रहते थे। उपेक्षा और निर्धनता के कारण बचपन में सूरदास ने अपना घर छोड़ दिया था। सूरदास जी के माता-पिता के सम्बन्ध में हरिराय जी ने केवल इतना ही लिखा है कि वे सारस्वत ब्राह्मण थे और अत्यन्त दरिद्र थे। उनके चार पुत्र थे, जिनमें सूरदास सबसे छोटे थे। मिश्रबंन्धुओं ने भी इन्हें एक दरिद्र सारस्वत ब्राह्मण का पुत्र माना है।

सूर के जीवन-सम्बन्ध में 'साहित्यलहरी' में एक पद मिलता है। उस पद के अनुसार सूर 'पृथ्वीराज रासो' के लेखक चंदकवि के वंश में उत्पन्न हुए। इनके माता-पिता का नाम नहीं दिया लेकिन इनके बड़े भाई मुसलमानों के साथ युध्द करते हुए मारे गये और स्वयं सूर अन्धे होने के कारण बच गये।

नामकरण --

सूरदास की रचनाओं के अंत: साक्ष्य और वार्ता आदि के बाह्य साक्ष्य से यह ज्ञात नहीं होता कि सूरदास का मूल नाम क्या था। उनकी रचनाओं में जो नाम मिलते है उनमें सूर, सूरज, सूरश्याम, सूरजदास और सूरदास प्रमुख हैं। सूरदास के नामकरण के बारेमें प्रभुदयाल मित्तल लिखते हैं कि सूरदास का मूल नाम सूरज होगा। सूरज का लघुरूप सूर है। जब सूरज विरक्त होकर भक्ति मार्ग के अनुगामी हो गये, तब उन्हें सूरदास अथवा सूरजदास कहा जाने लगा।[७] जयकिशन प्रसाद खण्डेवाल ने भी सूर के नामकरण के बारेमें लिखा है -- सूरदास का मूल नाम सूरजदास था, लेकिन संन्यास लेनेपर सूरदास नाम से विख्यात हुए।[८]

डॉ. मुन्शीराम शर्मा के अनुसार सूर, सूरज, सूरजदास, सरश्याम आदि सभी उपनाम महाकवि सूरदास के ही हैं। पद रचना में जहाँ जैसा उपयुक्त जान पडा और पद के अनुकूल बैठ गया वहाँ वैसा ही नाम उन्होंने प्रयुक्त कर दिया है। साहित्य लहरी के पद संख्या ११८ की इस पंक्ति से भी सूर के कई उपनामों का समर्थन होता है।

नाम राखे मोर सूरजदास सूर सुश्याम

सूरदास जी के नामकरण के बारेमें एक और बात कहनी योग्य है, कि उनके कुछ पदों में सूरदास नाम आता है तो कुछ पदों में सूरश्याम उदाहरण के लिए नीचे लिखे पद देखिए --

१ जधपि मन समझावत लोग।
सूल होत नवनीत देखि मेरे मोहन के मुख जोग।।

× × ×

बिदरत नही ब्रज को हिरदय हरि वियोग क्यो साहिए।
सूरदास प्रभु कमल-नैन बिनु कौने विधि ब्रज रहिए।।

× × ×

२ कहियो पथिक जाइ घर आवहु राम-कृष्ण दोउ भैया ।
सूर स्याम कत होत दुखारी जिनके मोसी मैया ।।

इन पदों को पढ़कर अनुमान होता है कि सूर के पद विभिन्न गायकों के हाथ में पड़कर अपने मूल रूप से कुछ भिन्न भी हो गये हैं । सम्भव है, इन गायकों ने अपनी रुचि के अनुकूल सूर के प्रसिध्द उपनामों में से कहीं सूर कहीं सूरदास कहीं सूरश्याम उपनाम रख दिये हैं ।

बाल्य-काल --

बचपन के दिनों को गौरव के दिन माना जाता है । लेकिन सूरदास जी के बचपन में यह दिन नहीं आये । बाल्य-काल में सूर को सिर्फ उपेक्षा और अपमान ही सहन करना पड़ा । सूरदास का जन्म गरीब,निर्धन ब्राह्मण परिवार में हुआ था । जब सूरदास उत्पन्न हुए तब उनके माता-पिता हर्षित होने की अपेक्षा अत्यंत शोकाकुल हो गये । इसका कारण था सूर का जन्मान्ध होना तथा घर की दरिद्रता । इस जन्मांध शिशु का जन्म जब हुआ,तब उनके पिताजी को यह चिंता सताने लगी कि इस दीन-हीन दशा में इस विकलांग बालक का पालन-पोषण किस प्रकार होगा । ऐसी परिस्थिति में सूरदास अपने माता-पिता तथा भाइयों को भार स्वरूप जान पड़ने लगे ।

जब तक सूर अबोध थे तब तक उन्हें अपनी दुर्दशा का अनुभव नहीं हुआ था, किन्तु जैसे ही वे कुछ समझने - बूझने लगे तब इन्हें अपनी दयनीय स्थिति का एहसास होने लगा । फलत: उन्होंने अपने माता-पिता, बंधु-बाँधव और संगी-साथियों को छोड कर गृह-त्याग किया । लाठी टेकते हुए गाँव के बाहर तालाब के तट पर आकर पीपल के वृक्ष तले बैठकर उन्होंने अपनी काव्य साधना आरंभ की ।

शिक्षा और पांडित्य --

सूर की प्रारंभिक शिक्षा के सम्बन्ध में कोई प्राचीन उल्लेख नहीं मिलता ।

किस प्रकार उन्होंने कविता करना प्रारंभ किया ? कब और किससे ज्ञान-विद्या सीखी ? यही भी ज्ञात नहीं होता । इन्होंने विद्या पढी या नहीं ? संगीत का अभ्यास किसके सम्पर्क से किया ? इन्हें काव्य-रचना किसने सिखलाई ? पुराणों का इतना अधिक ज्ञान इन्हें कैसे प्राप्त हुआ ? ये सभी बातें अज्ञात हैं । मालूम होता है कि इन्होंने वर्णमाला सीखी नहीं थी, फिर भी इनको स्वाभाविक प्रतिभा से भाषा और साहित्य की बारीकियाँ इन्हें ज्ञात हो गई थीं । ` इन्होंने पुराणों की कथाओं का इतना अधिक उल्लेख किया है, नायिका भेदों का इतना प्रचूर प्रयोग किया है, दृष्टकूटों के लिखने में अपने कोषज्ञान का इतना अधिक परिचय दिया है, मन के सूक्ष्म से सूक्ष्म भावों के चित्रण में इतने उपयुक्त शब्दों का उपयोग किया है कि इन्हें अनपढ मानने का साहस नहीं होता ।` [९] संभव है उस वृक्ष के नीचे रहते हुए यन्होंने अपने पढे-लिखे भक्तों एवं मित्रों के संसर्ग से पुराण, साहित्य एवं संगीत का ज्ञान प्राप्त किया होगा ।

" सूरदास के संगीत के ज्ञान के बारेमें ब्रजेश्वर वर्मा लिखते हैं, ` सूरसागर ` में स्थान-स्थान पर हमें संगीत का जो उच्च वातावरण मिलता है, उससे विदित होता है कि सूरदास की प्रकृति में काव्य और संगीत मूर्तिमान होकर धुलमिल गए थे ।` [१०] इन्होंने काव्य - रचना कब प्रारंभ की यह कहना कठिन है । यदि पन्द्रह वर्ष की उम्र से अपने गीत बना कर भक्तों की मण्डली एवं मित्रों की गोष्टी में गाये ऐसा माना जाय, तो इनका काव्य-रचना काल सं.१५५० के आसपास मनना पड़ेगा ।` यदि सं.१५५० से लेकर सं.१५६० तक के पद अपरिपक्व एवं नष्ट करने लायक माने जायें तो सं.१५६० से सं.१६४० तक इनका काव्य-रचना काल माना जा सकता है ।` [११]

वल्लभाचार्य से गुरु-दीक्षा प्राप्त करना --

सूरदास रूनकता के पास यमुना किनारे गऊघाट नामक स्थान पर रहते थे और विनय के पद गाया करते थे । एक बार वल्लभाचार्य वहाँ पधारे तब सूर भी उनके दर्शन करने के लिए गए । तब आचार्य जी ने इन्हें भगवद्भजन गाने की आज्ञा

दी तब सूर ने दो भजन गाए --

` प्रभु हैं। सब पतितन का टीकौ`

तथा

` हौं हरि सब पतितन कौ नायक`

सूरदास जी के सख्य-भाव के इन पदों को सुनकर आचार्य जी को सूर की दीनता तथा घिघियाना अच्छा नहीं लगा। तब आचार्य जी ने सूर से कहा` सूर होकर ऐसे घिघियाते काहे को हो कछु भगवत् लीला वर्णन करो।` बाद में आचार्य जी ने सूर को पुष्टिमार्ग की दीक्षा प्रदान की, जिसके सहारे सूर ने अपने जीवन में कृष्ण-भक्ति सम्बन्धी असंख्य पद रचे।

सूरदास को रचनाएँ --

काशी नागरी प्रचारिणी सभा तथा आधुनिक अनुसन्धानों के अनुसार सूर-प्रणीत ग्रन्थों की संख्या २५ सिध्द होती है। उनके नाम इस प्रकार है ---

१	सूरसागर	- प्रकाशित रचना है।
२	सूरसारावली	- ` सूरसागर` की कुछ प्रतियों के साथ उपलब्ध ` सूरसागर` का स्वतंत्र रूप है।
३	साहित्यलहरी	- ` सूरसागर` से अलग यह एक स्वतंत्र रचना है। इसमें १०८ पद है।
४	भागवत भाषा	- ` सूरसागर` का एक अंश है। इसे स्वतंत्र रचना माना है यह अप्रकाशित है।
५	दशमस्कंध टीका	- यह भागवत के दशमस्कंध का अनुवाद है। यह ` सूरसागर` का अंश है।

६	सूरसागर सार	– 'सारावली' और 'सूरसागर' के कुछ पदों का संकलन है।
७	सूरदास के पद	– यह 'सूरसागर' का अंश है। कुछ पदों का स्वतंत्र छोटा संकलन है। यह प्रकाशित रचना है।
८	नाग-लीला	– कालिया नाग सम्बन्धी कथा इसमें है। यह रचना भी 'सूरसागर' का अंश है।
९	गोवर्धन-लीला	– इसमें श्रीकृष्ण द्वारा गोवर्धन उठाने की लीला का वर्णन है। यह 'सूरसागर' का अंश है।
१०	सूर पच्चीसी	– उपदेश का एक दीर्घ पद है। यह भी 'सूरसागर' का अंश है।
११	ब्याहलो	– 'सूरसागर' से ली हुई यह रचना है इसमें राधा और कृष्ण के विवाह का वर्णन है।
१२	प्राणप्यारी	– राधा और कृष्ण के विवाह वर्णन का यह एक दीर्घ पद है। इसे अप्रामाणिक माना गया है।
१३	सूर शतक	– 'साहित्य लहरी' के चुने हुए पदों का संग्रह है।
१४	नल-दमयंती	– यह नल-दमयंती की कथा पर आधारित रचना है। इसे अप्रामाणिक माना गया है।
१५	हरिवंश-टीका	– 'यह भी एक अप्रामाणिक मानी गयी रचना है।
१६	राम-जन्म	– 'रामचरित मानस' की शैली में लिखी यह रचना सूरदास के नाम पर मिलती है। यह अप्रामाणिक रचना है।

१७	एकादशी महात्म्य	- सूरदास के नाम पर मिलनेवाली यह एक अप्रामाणिक रचना है ।
१८	सेवाफल	- सूरदास के नामपर मिलनेवाली यह एक अप्रामाणिक रचना है ।
१९	राधा रस केली कौतुक	- राधा और कृष्ण से सम्बन्धीत प्रमुख पदों का संग्रह ।
२०	सूरदास के विनय के पद	- यह सूर की प्रारंभिक पद रचना है । इसमें आत्मदीनता का भाव है ।
२१	दृष्ट कूट के पद	- यह क्लिष्ट पद रचना है, इसमें शृंगार तथा काव्यशास्त्र का निरूपन मुख्य है ।
२२	बाललीला	- कृष्ण की बाल-लीला से सम्बन्धीत पदों का संग्रह इसमें है ।

निष्कर्ष ---

सूरदास के व्यक्तित्व और कृतित्व का अध्ययन करने के बाद हम इस निष्कर्ष पर आ जाते हैं ।

सूरदास का जन्म १५३५ की वैशाख-शुक्ल ५ मंगलवार को सीहो नामक गाँव में एक निर्धन सारस्वत ब्रह्मण परिवार में हुआ था । सूर जन्मांध थे अत: जन्मांध होने के कारण सूर को माता-पिता का स्नेह कभी नहीं मिला । वे माता-पिता को भार-स्वरूप जान पडते थे । इसका परिणाम यह हो गया कि सूरदास ने बचपन में ही अपना गृह त्याग दिया था और गाँव के पास चार कोस दूर किसी तालाब के

किनारे पिपल के वृक्ष तले बैठकर अपनी काव्य-साधना आरंभ की ।

सूरदास की रचनाओं को लेकर विवाद है । उनकी प्राय: सभी रचनाएँ 'सूरसागर' में एकत्रित की जाती हैं । सूरदास ने अपनी काव्य-साधना आचार्य वल्लभाचार्य जी के पुष्टिमार्ग के अनुसार की है । वल्लभाचार्य जी सूरदास के दीक्षा गुरू थे ।

संदर्भ सूची

१ संपादक शर्मा हरबंसलाल
` सूरदास` राधाकृष्ण मूल्यांकन माला
पृष्ट क्र.१४

२ डॉ.गुप्त दीनदयालु
` अष्टछाप और वल्लभ-सम्प्रदाय`
पृष्ट क्र.२१२

३ पारिख द्वारिकादास
तथा
मीतल प्रभुदयाल
` सूर - निर्णय`
पृष्ट क्र.५३

४ शर्मा राजनाथ
` हिन्दी साहित्य का विवेचनात्मक इतिहास`
पृष्ट क्र.३११

५ डॉ.वर्मा ब्रजेश्वर
` सूरदास`
पृष्ट क्र.१४

६ पारीख द्वारिकदास
तथा
मीतल प्रभुदयाल
` सूर निर्णय`
पृष्ट क्र.६९

७ मीतल प्रभुदायल
` सूरदास` शोधपूर्ण जीवन - वृत्तांत
पृष्ट क्र.१७

८ डॅा.खण्डेवाल जयकिशान प्रसाद
` महाकवि सूरदास`
पृष्ठ क्र.४

९ प्रो.शर्मा जगन्नाथ
` सूर साहित्य वर्णन`
पृष्ट क्र.६

१० वर्मा ब्रजेश्वर
` सूरदास`
पृष्ट क्र.१३

११ प्रो.शर्मा जथन्नाथ
` सूर साहित्य वर्णन`
` पृष्ट क्र.७

••